दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-1)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL2

Name: Devendra Prakash Meena **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** XXX

Center & Date: Delhi & 02/07/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: _____

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित है।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।*
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास

~~प्रकृतवादी~~

प्रकृतवाद एक विशिष्ट दर्शन है, जो मानव एवं प्रकृति के संबंधों को प्रकट करता है। इस दर्शन में मानव ~~तक~~ को प्रकृति के अन्य प्राणियों की भाँति समझा जाता है।

प्रकृतवादी उपन्यास मानव के स्वाभाविक विकास पर बल देता है। वह सामाजिक बंधनों, ~~रूढ़िवाद~~ रूढ़िवाद से परे होकर मानव एवं प्रकृति को उसी रूप में प्रकट करता है, जिस रूप में है।

इन उपन्यासों में मानव पशु की भाँति सभी प्रकार के आकर्षणों से मुक्त होता है। उस पर किसी धर्म, विचारधारा का बंधन नहीं होता है।

हिन्दी साहित्य में प्रकृतवादी उपन्यास लेखन में चतुरसेन शास्त्री, पांडेय बेचन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शर्मा 'उग्र' ने महत्वपूर्ण स्थान रखते है।

चतुरसेन शास्त्री के हृदय की परख,
हृदय की प्यास, वैशाली की नगरवधू इसी
तरह के उपन्यास है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't writ
anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

शुक्ल पश्चात् हिं साहित्य इतिहास लेखन परम्परा में जिस समीक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है, वे है - रामस्वरूप चतुर्वेदी

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने शुक्ल जी तथा द्विवेदी जी की विचारधाराओं का समावेश करते हुये साहित्य इतिहास लेखन किया।

उनकी पुस्तक ~~साहित्य~~ 'हिन्दी साहित्य और संवेदना' का विकास' है। संवेदना एवं विकास शब्द उनकी विचारधारा की पुष्टि करते है।

'संवेदना' उन्हे आचार्य शुक्ल जी के 'हृदय की संचित्र वृत्तियों' के निकट ले जाती है, तो वही 'विकास' उन्हे द्विवेदी जी के 'परम्परा आधारित दृष्टिकोण' से जोड़ता है।

चतुर्वेदी जी की भावा संबंधी पकड एवं साहित्य की प्रकृति की सूक्ष्मता उन्हे विभिन्न प्रवृत्तियों के संबंध में विश्लेषण में मदद करती है। वे इसी आधार पर शायरी एवं दोहे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की जीवन्तता की तुलना करते हुये लिखते है - "लिखने की सजगता जीवन्तता को कम करती है, वहीं कहने की सजगता जीवन्तता को बढ़ाती है।"

वे साहित्य के विभिन्न रूपों जैसे- गद्य एवं पद्य में व्याप्त अन्तरों को भी पहचान पाते है। उन्होंने स्पष्ट किया कि गद्य लेखन स्वभाव से ही तत्समीपन के प्रति आग्रह रखता है। वे अज्ञेय की पंक्ति का उदाहरण देते है-

"वेदना में एक शक्ति है, जो दृष्टि देती है। द्रष्टा वहीं हो सकता है, जो यातना में है।"

साथ ही उन्होंने भक्ति और शृंगार के विवाद को सुलझाते हुये कहा कि दोनों में सूक्ष्म अन्तर है तथा ईश्वर मनुष्य से अधिक क्षमताएं रखता है अतः वह शृंगार में मानव से अधिक मानव हो सकता है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि चतुर्वेदी जी ने शुक्ल जी की विधेयवादी तथा द्विवेदी जी की परम्परावादी दृष्टिकोण के साथ स्वयं की मौलिकता का प्रक्षेपण कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) इप्टा का परिचय और महत्त्व

इप्टा भारतीय नाट्य एवं रंगमंच परम्परा के संवर्धन के लिए बनाया गया एक संगठन है।

इसकी स्थापना स्वतंत्रता से पूर्व की गई थी किन्तु यह प्रभावी रूप से कार्यरत स्वतंत्रता के पश्चात हुआ।

इप्टा का महत्त्व -

→ भारतीय नाट्य परम्परा के संवर्धन का कार्य करना।

→ रंगशालाओं के निर्माण को प्रोत्साहित करना।

→ नये नाटककारों को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देना।

→ समय-समय पर नाट्य मंचन द्वारा जनता को नाटक परम्परा से जोड़ना।

→ हाशिए पर जा रही नाट्य परम्परा को अन्य प्रतिस्पर्धियों के साथ प्रतिस्पर्धा के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

लिए सहायता करना।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इप्टा हिन्दी रंगमंच एवं नाट्य परम्परा के संवर्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

घनानन्द रीतिकाल में होते हुये भी अपनी कलम गिरवी नहीं रखते और तत्कालीन देहमूलक शृंगार की बजाय आत्ममूलक शृंगार को महत्व देते है।

उनकी भाषा ब्रजभाषा है किन्तु वे तत्कालीन अन्य कवियों की भाँति अरबी-फारसी का प्रयोग नहीं करते हुये भाषायी शुद्धता पर बल देते है। इसलिए इन्हे <u>भाषा प्रवीण</u> भी कहा जाता है।

इनकी भाषा के संबंध में शुक्ल जी के वही विचार है, जो कबीर के संबंध में द्विवेदी जी के थे। शुक्ल जी घनानन्द की भाषा की प्रशंसा करते हुये कहते है-

> "भाषा पर जबरदस्त अधिकार था उनका मानो भाषा उनके हृदय से जुड़कर वशवर्तनी हो गई है।"

घनानन्द ने भाषा को गहरी भावनाओं से युक्त किया। इसीलिए शुक्ल जी ने इन्हे 'प्रेम के पीर' के रूप में संदर्भित किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

घनानन्द ने भाषा के स्तर पर अर्थालंकार का भी सघा हुआ प्रयोग किया है। यह प्रयोग बिहारी की भाँति बुद्धि प्रेरित वक्रता लाने की बजाय भाव प्रेरित वक्रता की दृष्टि से किया गया है।

उदाहरण

" कौन सो पाटी पढ़े हो लला,
मन लेहुँ पर देहु छटाँक नहीं

यहाँ 'मन' और 'छटाँक' में यमक अलंकार है।

इसी प्रकार स्पष्ट है कि बिहारी ने जिस भाषा की समास क्षमता एवं समाहार क्षमता को मजबूत किया, घनानंद ने उसी ब्रज भाषा को भावनाओं की गहराईयों से जोड़ा।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't wri
anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) मनोवैज्ञानिक कहानी

प्रेमचन्द पश्चात् युग में कहानी में कुछ नवीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है, उन्ही नवीन प्रवृत्तियों में जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी तथा अज्ञेय ने मनोवैज्ञानिक कहानी लेखन का सूत्रपात किया।

मनोवैज्ञानिक कहानी की विशेषताएं

→ इन कहानियों के पात्र वर्गगत न होकर विशिष्ट होते है।

→ इन कहानियाँ में प्रेमचन्द की भाँति घटनाओं के वर्णन की बजाय विश्लेषण अधिक है। कभी-कभी क्षण के विश्लेषण में कहानी पूरी हो जाती है।

→ इन कहानियों में चरित्र बाहरी समाज से कम तथा अपने आप से अधिक लड़ते है।

→ इन कहानियों पर सार्त्र के अस्तित्ववाद तथा फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव है।

→ विश्लेषण प्रधान होने के कारण तथा आंतरिक मन की गहराईयां प्रकट करने के कारण भाषा बेहद प्रतीकात्मक हो जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रमुख कहानीकार

जैनेन्द्र - पाजेब, खेल

→ इलाचन्द्र जोशी - चरणों की दासी, स्त्रीमय, होली और दीवाली

→ अज्ञेय - रोज / गैंग्रीन, पठार का धीरज, जयदोल

इस प्रकार स्पष्ट है कि मनोवैज्ञानिक कहानी ने व्यक्ति को महत्त्व दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल औपचारिक साहित्य इतिहास लेखन के सर्वश्रेष्ठ हस्ताक्षर है. उनके द्वारा सबसे प्रामाणिक साहित्य इतिहास लिखा गया।

~~उनकी~~ उनके साहित्य इतिहास लेखन की विशेषताओं में प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण, विश्लेषण का महत्व, समाजनिष्ठ तथा रसवादी विचारधारा का समन्वय प्रमुख है

किन्तु उनके साहित्य इतिहास लेखन में द्विवेदी जी ने कुछ तथ्यों के आधार पर सीमाओं का निर्धारण किया -

① द्विवेदी जी ने उनकी प्रत्यक्षवादी दृष्टि की आलोचना करते हुये लिखा कि प्रत्यक्ष को ही महत्व देने के कारण वे कबीर की वाणी पर साथों की अक्खड़ता के प्रभावों को नहीं समझ पाये।

② वस्तुनिष्ठ कारणों की खोज में भी तत्कालीन तथ्यों को महत्व देना भक्ति आन्दोलन के विकास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में इस्लाम की भूमिका मानता है, जबकि द्विवेदी जी ने इसे भी लंबी विकसित परम्परा का हिस्सा स्पष्ट किया, जो दक्षिण भारत से ही चली आ रही थी।

③ आदिकाल को शुक्ल जी ने वीरगाथा काल नाम दिया उनके अनुसार इस काल की अधिकांश प्रवृत्ति वीरकाव्य की थी किन्तु द्विवेदी जी ने स्पष्ट किया कि - "जो अधिकतम है, वह भी सम्पूर्ण का कुछ अंश ही हो सकता है।

④ रीतिकाल के आरंभ से संबंधित विवाद में भी द्विवेदी जी ने शुक्ल जी की आलोचना की। उन्होंने कहा कि चिन्तामणि की बजाय केशवदास रीति काल के पूर्वक होने चाहिए क्योंकि केशवदास संकीर्ण अर्थ में अलंकारवादी हैं, व्यापक रूप में रसवादी।

⑤ आचार्य शुक्ल के साहित्य इतिहास लेखन की एक सीमा उनका सगुण, प्रबंध तथा लोकधर्म के प्रति आग्रह भी है। इस कारण वे मुक्तक

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा निर्गुण के मर्दन को स्पष्ट नहीं कर पाये।

⑦ उनके साहित्य इतिहास लेखन की एक व सीमा तत्कालीन साहित्य का मूल्यांकन नहीं कर पाना भी है। प्रेमचन्द जैसे महान लेखक को उन्होंने साहित्य इतिहास लेखन में शामिल नहीं किया।

सारांशतः कहा जा सकता है कि कुछ सीमाओं के बावजूद शुक्ल जी का साहित्य इतिहास लेखन प्रभावी महत्व रखता है। इसलिए कहा भी गया है-

"हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन मुख्यतः शुक्लजी की मान्यताओं का मंडन-खंडन है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मोहन राकेश की कहानियों के विषय-वैविध्य का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश नवलेखन दौर के प्रमुख स्तंभकार है। उन्होंने कहानी, उपन्यास तथा नाटक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मोहन राकेश की रचनाओं पर तत्कालीन समय में प्रभावी अस्तित्व-बोध का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

मोहन राकेश के प्रमुख कहानी संग्रह है - इंसान के खंडहर, 'जानवर और जानवर' 'एक और जिंदगी', 'फौलाद का आकाश'

इंसान के खंडहर में वे समाज को सूक्ष्म दृष्टि से देखते हुये धार्मिक आडम्बरों, विषमता आदि को उजागर करते है। 'मरुस्थल' कहानी में उन्होंने पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की शुष्कताओं का अंकन किया है। उनकी कहानियों की मूल विषय वस्तु है - 'विसंगति'। व्यक्ति का उसके परिवेश से विलगाव उनकी कहानी का अंग है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

~~एक और कहानी~~

'एक और जिंदगी' संग्रह की कहानियाँ मुख्य जीवन के संघर्ष से संबंधित है, जिसमें नायक जीवन की यंत्रणाओं को झेलने को मजबूर है। एक और जिंदगी एवं मिस पाल इस की प्रतिनिधि कहानियाँ है।

उनकी कहानियो का एक वर्ग नारी-पुरुष संबंधो की टकराहट को भी दर्शाता है। वही एक वर्ग में वे यौन चेतना से संबंधित कहानियो की भी रचना करते है। इस प्रकार की कहानियों में कंबल, वासना की छाया प्रमुख है।

मोहन राकेश की रचनाओ में व्यक्त शहरी जीवन की जटिलता, स्त्री पुरुष संबंधों में टकराव को वे स्पष्ट करते हुये कहते है -

"मेरी रचनाएँ वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य मे वर्तमान लोगो के लिए है। वे जीवन की यातनाओं को अकेलेपन में झेलने को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मजबूर लोगों का प्रतिनिधित्व करती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मोहन राकेश की कहानियाँ का विषयगत वैविध्य नई कहानी के दौर की सभी आयामों से युक्त है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) चौथा सप्तक

कृपया इस स्थान ... कुछ न लिखें।
(Please don't w... anything in thi...

चौथा सप्तक नामवर सिंह द्वारा संकलित कृति है जिसमें सात कवि सम्मिलित है - अवधेश कुमार, राजकुमार कुंभज, स्वदेश भारती, नंदकिशोर आचार्य, सुमन राजे, श्रीराम वर्मा एवं राजेन्द्र किशोर

प्रथम सप्तक की रचना अज्ञेय द्वारा की गई थी। वे कवियों को किसी विचारधारा में बंधकर कविकर्म करने की बजाय प्रयोग द्वारा सत्य के अर्जन पर बल देते है।

चूंकि इन कवियों द्वारा प्रयोग करते रहने के कारण नवीन आयामों का कविता में समावेश हुआ।

इसी कड़ी में नामवर सिंह ने चौथे सप्तक के माध्यम से ऐसे कवियों की कृतियों का संकलन किया। जो किसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विचारधारा में बंधने की बजाय स्वतंत्र होकर रचना कर रहे थे।

अज्ञेय ने चौथे सप्तक की भूमिका लिखते हुये कहा था कि -

"चौथा सप्तक तीन सप्तकों के बाद लंबे अन्तराल बाद प्रकाशित हो रहा है। ×××
इन कवियों में अनेक विविधता के बावजूद प्रयोग करने की एक समानता भी है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रथम तार-सप्तक से प्रारंभ हुई प्रयोग की यह परम्परा चौथे सप्तक पर जाकर पूर्ण हुई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द हिन्दी उपन्यास के पुरोधा है, जिन्होंने हिन्दी उपन्यास लेखन को परिपक्वता प्रदान की। ~~किया~~

प्रेमचन्द पूर्व युग में जब उपन्यास विधा जन्म ले रही थी तब इसमें अनेक प्रकार के विषयों का समावेश किया जा रहा था।

प्रेमचन्दपूर्व हिन्दी उपन्यास को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-

① <u>नैतिक उपदेशात्मक उपन्यास</u> :-

इस दौर में पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण नवजागरण की विचारधारा का प्रभाव था। अतः लेखक समाज को नैतिक चरित्रमान, उपदेश आदि की स्थापना एवं पालन पर बल दे रहे थे।

इन लेखकों का मुख्य उद्देश्य पश्चिमी संस्कृति के प्रभावों के समक्ष अतीत की श्रेष्ठता को उजागर करना था।

<u>उदाहरण</u> - परीक्षा गुरु, भाग्यवती, वामा शिक्षक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मनोरंजक उपन्यास : चूंकि उपन्यास विधा का एक उद्देश्य शहरी मध्यवर्ग को स्वस्थ मनोरंजन की उपलब्धि कराना था, अतः प्रेमचन्दपूर्व युग में अनेक मनोरंजक परक उपन्यासों की रचना की गई।

समाज में फैल रही अनिश्चितता को इसी मनोरंजकता की आवश्यकता थी।

उदाहरण. चन्द्रकांता, चन्द्रकांता संतति

③ ऐतिहासिक उपन्यास - इस प्रकार के उपन्यासों में इतिहास के उजले पक्ष को दर्शाना था ताकि राष्ट्र प्रेम की भावना का संचार हो सके।

चूंकि इस तब सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन का भी प्रभाव उपस्थित था। अतः नारी की स्थिति में सुधार के लिए भी उपन्यास लिखे गये।

उदाहरण - रजिया सुल्तान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सारांशतः स्पष्ट है कि प्रेमचन्दयुगीन उपन्यास लेखन में पर्याप्त विविधता उपस्थित थी, जिसे प्रेमचन्द ने परिपक्वता प्रदान की।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी सूफीकाव्यपरंपरा में 'मधुमालती' के वैशिष्ट्य का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य की 'निर्गुण प्रेमाख्यानक' काव्यधारा का संबंध सूफी परम्परा से है। जिसमें जायसी की पद्मावत, कुतुबन की 'मृगावती'; मुल्ला दाउद की 'चन्दायन' तथा कुतुबन मंझन की मधुमालती प्रमुख है

मंझन ने तत्कालीन परम्परा का अनुसरण करते हुये भाषा के स्तर पर अवधी का प्रयोग किया। अवधी के ठेठपन ने 'मधुमालती' को माधुर्य गुण से युक्त किया है।

मधुमालती में कवि ने अपनी अल्लाह के प्रति इश्क मजाजी तथा इश्क हकीकी को प्रतीक रूप में प्रकट करते हुये भावनात्मक रहस्यवाद का सुन्दर पुट समावेशित किया है।

मंझन ने 'मधुमालती' के द्वारा तत्कालीन समाज में टकराव को कम करने के लिए प्रेम को मूल्य के रूप में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थापित किया है।

जिस प्रकार जायसी ने कहा कि - "मानुस प्रेम भये बैकुंठी, नादि ते काह छार एक मूंठी"। अर्थात् उन्होंने प्रेम को सर्वोपरि माना है।

उसी प्रकार मझंन ने भी 'मधुमालती' में स्पष्ट किया है -

"पथमहि आदि प्रेम परविट्टी
तो पाछै भये सकल सिरिट्ठी।"

अर्थात् उन्होंने प्रेम तत्व को इस लोक का सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व घोषित किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मझंन ने मधुमालती के द्वारा अपनी भावनात्मक रहस्यवाद रूपी मान्यताओं को तो पुष्ट किया ही, तत्कालीन समाज की आवश्यकता एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अनिवार्यता के रूप में प्रेम को स्थापित भी। किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पारसी रंगमंच की विशिष्टताओं का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पारसी रंगमंच 19 वीं सदी के अन्त में विकसित हुई एक रंगमंच परम्परा थी, जिसने हिन्दी रंगमंच में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

विशिष्टताएँ

→ पारसी रंगमंच एक पूर्णत: व्यावसायिक रंगमंच था, अत: दर्शक आकर्षित करने एवं रोमांच पैदा करने के लिए मौलिकताओं पर बल दिया जाता था।

→ पारसी रंगमंच परम्परा में जनता को कौतुहल से युक्त करने के लिए स्टेज पर जानवरों को लाना, डरावने दृश्य आदि को महत्व दिया जाता था।

→ पारसी रंगमंच परम्परा में चित्रित पर्दे, अधिक प्रकाश, तथा तड़क-भड़क का उपयोग किया जाता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। →
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पारसी रंगमंच परम्परा में दर्शकों की बोरियत दूर करने तथा उत्साहवर्धन के लिए गीत-तथा नृत्य का स्वरूप विद्यमान रहता था।

भारतेन्दु द्वारा नृत्य एवं संगीत को इसी परम्परा से अपनाया।

→ पारसी रंगमंच परम्परा अभिनेताओं की भी मौलिकता को स्वीकारती थी।

→ हिन्दी के मौलिक रंगमंच के विकास में पारसी रंगमंच की इन्हीं विशिष्टताओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

सारांशत: स्पष्ट है कि पारसी रंगमंच भले ही पूर्ण व्यावसायिक हो किन्तु इसकी मौलिकता एवं लोकप्रियता ने हिन्दी रंगमंच के विकास को मजबूत आधार प्रदान किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की दो धाराएँ संतकाव्यधारा एवं सूफीकाव्यधारा दोनो निर्गुण की उपासना से संबंधित है किन्तु इनमें कुछ अन्तर भी पाये जाते है।

संतकाव्यधारा	सूफीकाव्यधारा
→ संत कवि निरक्षर थे, अतः किसी दार्शनिक प्रभाव से युक्त नही थे	→ सूफी कवि 'तसव्वुफ' अर्थात 'हकीकी' तथा 'मजाजी' से युक्त सूफियाना भाव से युक्त थे
→ संत कवियों द्वारा कोई निश्चित भाषा का प्रयोग नहीं किया गया। वस्तुतः इनकी भाषा 'पंचमेल खिचड़ी' थी।	→ सूफी कवियों द्वारा भाषा के रूप में मुख्यतः ठेठ अवधी तथा लिपि के रूप में फारसी / अरबी को चुना।
→ साहित्य की दृष्टि से कविताएं नहीं की। केवल उपदेश के लिए। कबीर	→ इन्होंने साहित्य के रूप में ही कविताएँ लिखी है। इनके ग्रंथ प्रायः प्रबंध

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ने कहा है कि -

" जिन तुम जान्यो गीत्रि
ते निज ब्रह्म विचार।"

→ इन कवियों के यहाँ साधनात्मक रहस्यवाद अधिक दिखाई देता है -

" अवधू गगनमंडल घर कीजै
अमृत झरै, सदा सुख उपजै,
बंकनालि रस पीजै।"

या मसनवी शैली के है।

→ इन कवियों के यहाँ भावनात्मक रहस्यवाद उपस्थित है।

" जेहि दिन दसन ज्योति,
निरमई,
बहुतै ज्योति जोति ओहि
भई।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

प्रगतिवाद से तात्पर्य मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित साहित्य से है। अर्थात् प्रगतिवाद मार्क्सवाद का साहित्यिक रूप है।

हिन्दी में अधोजित रूप में प्रगतिवादी विचारधारा से संबंधित उपन्यास प्रेमचन्द युग में दिखाई देते हैं किन्तु घोजित रूप में 1936 के बाद ही प्रगतिवादी उपन्यास लेखन हुआ।

प्रगतिवादी उपन्यास

→ इस विचारधारा के उपन्यास मजदूर, किसान, शोषित वर्ग की समस्याओं को केन्द्र में रखते है।

→ इन उपन्यासों में शोषित-शोषक का चरित्र विद्यमान रहता है।

→ इन उपन्यासों का उद्देश्य जनता को क्रांति चेतना के लिए प्रोत्साहित करना होता है।

→ चूंकि ये उपन्यास आम जनमानस से जुड़े है। अतः भाषा के रूप में साधारण भाषा तथा बिना प्रतीकों के अपनी बात कहते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रमुख उपन्यासकार

यशपाल - झूठा सच, पार्टी कॉमरेड, दादा कॉमरेड, दिव्या

→ रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ

इस उपन्यासधारा में यशपाल ने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनका झूठा सच एवं दिव्या इस धारा के प्रतिनिधि उपन्यास है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद, प्रयोगवाद के समानान्तर बिहार में विकसित हुआ एक आन्दोलन था। इसके प्रमुख लेखक नरेश मेहता, केसरी कुमार तथा नलिन विलोचन शर्मा है। अतः इसे 'नकेनवाद' भी कहते है।

इन ~~लेखकों~~ कवियों का मानना है कि ये वास्तविक प्रयोगवादी है, जबकि जो प्रयोगवादी है, वे वस्तुतः प्रयोगशील है क्योंकि वे प्रयोगों पर अधिक बल देते है।

नरेश ने प्रपद्य के 10 सूत्र स्थापित किये जिनके अनुसार प्रयोग सार्थक है। ये प्रयोग भाव व व्यंजना का स्थापत्य है।

ये प्रयोगवादी कवि रागात्मक प्रतीतियों को सर्वोपरि महत्व देते थे तथा कविता के संबंध में संप्रेषण की समस्या को भी निरर्थक मानते थे।

इस प्रपद्यवाद के संबंध में नामवर सिंह लिखते है कि -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"प्रयोगवाद का एक दूसरा रूप बिहार में विकसित हुआ, जो मूलतः इसकी एक प्रशाखा के समान था।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि अज्ञेय द्वारा तार सप्तक की रचना के पश्चात जिस प्रयोगवादी विचारधारा का जन्म हुआ, नकेनवाद। प्रपद्यवाद उसका विरोधी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

निराला छायावाद के प्रमुख कवि है, जिन्होंने छायावाद में अपनी विशिष्ट क्षमताओं के कारण महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया।

इस कविता में निराला ने तत्कालीन समस्याओं को उठाया है। निराला ने इसमें ~~सम की समस्या~~ तुलसीदास की जीवन के संघर्ष एवं दर्शन को स्पष्ट किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आंचलिक कहानी का परिचय

आंचलिक कहानी से तात्पर्य ऐसी कहानी से है, जिनमें चरित्र/नायक किसी अंचल द्वारा निभाया जाता है।

स्वतंत्रता के पश्चात, जब गाँव लोकतंत्र के केन्द्र में आये, तब लेखकों ने आंचलिकता को उभारना शुरु किया। इस दिशा में फणीश्वर नाथ रेणु का 'मैला आँचल' एक निर्णायक रचना थी।

'मैला आँचल' के पश्चात, आंचलिक कहानी लेखन की शुरुआत मानी जाती है। आंचलिक कहानी की सभी घटनाएँ उस अंचल का नायिकत्व उभारने में मदद करती है।

लेखक उस अंचल की आर्थिक, सामाजिक घटनाओं को दर्शाता है किन्तु सबसे महत्वपूर्ण पक्ष जो किसी कहानी को आंचलिकता प्रदान करता है, वो है उसका भौगोलिक तथा सांस्कृतिक वर्णन।

आंचलिक कहानी की विशेषता होती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

है कि यह अंचल की क्षेत्रीय संस्कृति को ध्वनि तथा चित्र रूप में प्रकट करते चलती है। भाषा के स्तर पर भी आंचलिकता बनी रहती है।

उदाहरण - लाल झंडा, ऊसर खेत, महुआ आम के जंगल, जलता सूरज, कगार का पानी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

छायावाद भावनाओं की प्रधानता का काव्य है। यह जीवन के आधारभूत भावों सत्य, शिव एवं सुन्दर में सौन्दर्य को सर्वाधिक महत्व देता है और यह सौंदर्य सत्य एवं शिव दोनो से युक्त है।

छायावादी कविता 'प्रकृति की विशिष्ट रचना' मानव को सर्वाधिक सुन्दर मानती है किन्तु अन्य प्राणियों को भी कमतर नहीं करती

उदाहरण

" सुन्दर है सुमन, विहग सुन्दर
मानव तुम सबसे सुन्दरतम।"

छायावादी कविता मानव के भावों के सौंदर्य को भी पवित्र मानती है और भावों की यह सुन्दरता उसे हृदय की गहराई पर ले जाती है।

छायावादी कवि नारी के सौंदर्य को भी प्रकट करते है किन्तु यह सौंदर्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रीतिकालीन 'अंग अंग नग जगमगति' की भाँति देहमूलक नहीं है। बल्कि नारी का यह सौंदर्य पवित्र है -

" तुम्हारे मिलने में था पाप
संग में पावन गंगा स्नान।"

छायावादी कवि प्रकृति की सुन्दरता को भी अपनी कविता का हिस्सा बनाते है। उनके लिए यह प्रकृति एक उद्दीपन विभाव या संवेदन आलोक की भाँति उपस्थित नहीं है

बल्कि प्रकृति को वे मानव रूप में कल्पित करते हुये 'प्रकृति का मानवीकरण' करते है -

" मेघमय आसमान से उतर रही,
संध्या सुन्दर परी सी
धीरे - धीरे - धीरे।"

Copyright – Drishti The Vision Foun

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

छायावादी कवि प्रकृति की सुन्दरता पर इतना मुग्ध है कि वह प्रकृति के साथ रहने की कल्पना भी करता है। कवि प्रकृति के सौंदर्य को नारी के सौंदर्य से अधिक महत्व देता है -

" छोड़ द्रुमों की मृदुल छाया,
प्रकृति से भी छोड़ माया,
बाले तेरे बाल जाल में
कैसे उलझा दूँ लोचन।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि छायावाद भावों की सुन्दरता के साथ प्रकृति के सभी घटकों की सुन्दरता का काव्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की 'नया उपन्यास' धारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में नव लेखन दौर में जिस उपन्यास की रचना हुई उसे नया उपन्यास कहा जाता है। नया उपन्यास के प्रमुख रचनाकार - मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, मन्नू भंडारी एवं कृष्णा सोबती है।

(क) आधुनिक भाव बोध से संबंधित :- चूंकि इस दौर में अस्तित्ववादी विचारधारा का प्रभाव बढ़ रहा था, ऐसे में विसंगति बोध, लघुमानववाद, आदि इन उपन्यासों की विषय वस्तु है।

इस प्रकार के उपन्यासों में मोहन राकेश का 'अंधेरे बंद कमरे' तथा निर्मल वर्मा का 'वे दिन' 'न आने वाला कल' प्रमुख है।

(ख) यौन चेतना से संबंधित :- इस दौर में यौन नैतिकता की पुनर्व्याख्या की गई। यौन इच्छा को भूख, प्यास की तरह स्वाभाविक मानकर उपन्यासों की रचना हुई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस श्रेणी की प्रमुख उप-न्यासकार कृष्णा-सोबती है, जो नारी पर लादी गई वर्जनाओं को तोड़ती है। उनका मित्रो मरजानी प्रमुख उपन्यास है।

(ग) आधुनिक नारी-पुरुष संबंध की टकराहट एवं शहरीकरण की समस्या :-

शहरी जीवन की नीरसता ने व्यक्ति का मोहभंग किया वहीं नये युग की नारी अपने अधिकारों की मांग कर रही थी, ऐसे में पितृसत्तात्मक समाज में बेचैनी तय थी।

इस प्रकार के उपन्यासों के द्वारा नारी के अधिकारों को सामने लाया गया। मन्नू भंडारी का आपका बंटी इस श्रेणी का उपन्यास है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नवलेखन दौर ने मानव जीवन की यंत्रणा तथा नारी चेतना

Copyright - Drishti The Vision Foundat

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को प्रकट करते हुये तत्कालीन शहरी जीवन का चित्रण किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) केशवदास के कविकर्म की मौलिकता पर विचार कीजिये। 15

केशवदास रीतिकाल के प्रमुख कवि है, जिनका महत्त्व रीतिकाल एवं भक्तिकाल दोनो में है। उनकी प्रमुख रचनाएं रामचन्द्रिका, कविप्रिया रसिकप्रिया है।

केशवदास की प्रसिद्धि राम भक्ति से संबंधित उनकी रचना 'रामचन्द्रिका' से है। रामचन्द्रिका में केशवदास की मौलिकता का प्रकटीकरण हुआ है -

① संवाद - योजना - केशवदास की विशिष्टता उनकी सँवाद योजना में है। जिन छोटे - चुस्त एवं गतिशील संवादो को रचना की सर्वश्रेष्ठता का आधार माना जाता है, उनके वे बादशाह है। एक ही वाक्य में चार - चार वाक्यों को प्रकट कर दिया है।

आचार्य शुक्ल जी ने भी प्रशंसा करते हुये कहा है कि -

" केशव की विशिष्टता उनकी संवाद योजना

Copyright – Drishti The Vision Foundat

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में है. उनका रावन अंगद संवाद तुलसी से बेहतर है।"

रावण - अंगद संवाद

राम को काम कहा, रिपु जीतहि,
कौन कबै रिपु जीत्यौ कहाँ।"

(2) छंद योजना - केशवदास ने छंदो के स्तर पर भी व्यापक प्रयोग किये है। उनके इसी प्रयोग ने उनकी रचना को छंदो का अजायबघर की संज्ञा दिलवाई है। उनसे पूर्व इतने छंदो का प्रयोग किसी ने नहीं किया।

(3) विषयवस्तु में मौलिकता - केशवदास ने राम की कथा को केवल संघर्ष की कथा नहीं माना बल्कि ~~इसमें~~ इसमें वनवासी जीवन तथा राजसी जीवन दोनो का समन्वय किया।

ओरछा राज्य के अपने अनुभव का उपयोग करते हुये उन्होंने राम के राजसी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जीवन को मौलिक रूप दिया

इसके अतिरिक्त कवि की विचारधारा एवं दृष्टिकोण भी मौलिक है. उन्होंने रचना के अन्त में ज्ञान एवं भक्ति को मुक्ति का आधार माना।

सारांशतः स्पष्ट है कि केशव की 'रामचन्द्रिका' उनकी मौलिकता का प्रतिबिम्ब है।

Copyright – Drishti The Vision Foundat

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'छायावाद पलायन का काव्य है।' इस मत पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation